श्रीमद्-भगवद्-गीता

गीत्तायन

मङ्गलाचरण

ॐ कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्

कविवरवदनं पञ्चकरं यं, पितुरपि पूर्वं प्रणमन्ति बुधाः।
गिरिपतितनयातनयं वन्दे, मृशतु वपुर्मे पञ्चमकरतः।। १
अभयकरं मम मूर्ध्नि निधेहि, प्रिय साङ्कुशपाशं करयुगलम्।
मम दोषसमूहेऽज्ञानरिपौ, तव चरणच्छायाशयितस्य।। २
धृतकमलं त्वं करकमलं मम, निटिलतटे हे स्पर्शय भगवन्।
मतिरतिविमला गीताभावं, विवरीतुमलं स्याल्लोकगिरा।। ३

'माँ' पद पहली बार उच्चार्‌या, था कदे जिस भासा का, थी वा।
हरियाणी भासा, बोल जिसे, आज बण्या मैँ पण्डत ग्यानी।। ४
उस भासा माँ की झोळी म्हैँ, गीताब्याक्ख्या फूल चढ़ाऊँ।
गीता-तत्त्व गन्ध सै इस कै, कण-कण मैँ या रची बसी अति।। ५
गणपति भाई सूँड उठा कै, सूँघै इस नै, झूम्मै नाच्चै।
छोट्टी-छोट्टी पर प्रेमभरी, लख नजराँ तैँ मन मैँ माच्चै।। ६
माँ तो सै या माँ ए मेरी, गन्दा-मन्दा अर सिणकू।
लाग्गूँ सूँ मैँ इस नै प्यारा, ठन्तर साल्लाँ तैँ मैँ देक्खूँ।। ७
जिद्दै तो माँ वा अर सूण्डू, गोद्दी तैँ नाँ मन्नै तारैँ।
आग्गै बी वैँ मन्नैँ न्यूँ ए, खूब प्रेम तैँ रोज दुलारैँ।। ८
भूर्, भुवः, सुवर् तीन पैड़ियाँ, ग्यान, करम की अर भगती की।
इन पै चढ़ मैँ भाज चढूँगा, महर जनस् की तपस् सत्य की।। ९
पुरुषार्थ च्यार-सी ये च्यारूँ, फोक्कट मैँ मन्नै मिल ज्याँ गी।
किरपा माँ की इसिये हो सै, जो या पावै, वो ए जाणै।। १०
बाट देख ह्वे थे सञ्जै की, आ जुध का हाल बतावैगा।
आओ चाल्लाँ हास्तिनपुर मैँ, राज्जा ध्रितरास्टर जित बैट्ठे।। ११
देख लड़ाई दस दिन ताईँ, कुरुछेत्तर तैँ बाप्पस आए।
सञ्जै नै न्यूँ बोल्ले राज्जा, दस दिन का न्यूँ हाल पूछदे।। १२

अथ प्रथमोऽध्यायः

पहला अर्जन का बिसादयोग अद्धयाय

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे, समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव, किमकुर्वत संजय।। १

(ध्रितरास्टर नै जुध का हाल पूच्छ्या)

ध्रितरास्टर बोल्ले

धरमभूमि कुरुछेत्तर मैँ वैँ, कट्ठे होए लड़ना चाँह्दे।
मेरे अर पाण्डू के छोह्रे, के थे कर ह्वे? कह रै सञ्जै।। १

संजय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं, व्यूढं दुर्योधनस्तदा।
आचार्यमुपसङ्गम्य, राजा वचनमब्रवीत्।। २

(सञ्जै नै खबर बताणी सरू करी)

सञ्जै बोल्या

देख कैँ पाण्डुवाँ की सैना, ब्यूह रचाई दुर्योधन तद।
आचार्य द्रोण कै धोरै जा, राजा नै या बात कही थी।। २

(दुर्योधन उवाच[१])

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण, तव शिष्येण धीमता।। ३

---

१ कुलछेत्तर मैँ जुध था होणा, हास्तिनपुर मैँ ध्रितरास्टर नै।
उस का हाल सुणावण खात्तर, कौरू पाण्डू दोन्नूँ नै ए।।
करी व्यवस्था, ब्यास बिचोळी, सञ्जै ताईं अधिकार दिये।
घूम-घूम कैँ मोच्र्यां पै जा, संवाद देणिये थे सञ्जै।।
आ रजधानी ध्रितरास्टर नै, आँख्याँ देख्या हाल सुणावै।
सारथि जो थे ध्रितरास्टर के, पाठक जाणै देख 'नौंम' मैँ।।

(दुर्योधन बोल्ल्या)

(दुर्योधन नै द्रोण तैं फौज्जाँ की स्थिति समझाई)

देक्खो इस पाण्डूपुतराँ की, आचार्य्य बडी सी सैना नै।
व्यूह रचा कैं खड़ी करी या, राज्जा दुर्पद कै बेट्टै अर।
थाह्रे अति चात्तर चैल्लै नै।। ३

अत्र शूरा महेष्वासा, भीमार्जुनसमा युधि।
युयुधानो विराटश्च, द्रुपदश्च महारथः।। ४

(पाण्डुवाँ के खास जोधे)

उरै बीर सैं महाधनुर्धर, भीम'र अर्जन-से ये जुध मैं।
खूब लड़ाक्का वीर सात्यकी, विराट इत सै ओर द्रुपद बी।।
महारथी, रथ बैठ लड़णियाँ।। ४

धृष्टकेतुश्चेकितानः, काशिराजश्च वीर्यवान्।
पुरुजित् कुन्तिभोजश्च, शैव्यश्च नरपुङ्गवः।। ५

ध्रिस्टकेतु सै खूब समझदा, युद्धकला का जाणनियाँ सै।
काशिराज अर तगड़ा जोधा, भोत जीतदा कुन्तिभोज सै।
सिबियाँ का राज्जा बी इत सै, मर्दाना यो खाग्गड़-सा सै।। ५

युधामन्युश्च विक्रान्त, उत्तमौजाश्च वीर्यवान्।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च, सर्व एव महारथाः।। ६

युधामन्यु सै भोत विक्रमी, ओर उत्तमोजा भोत बली।
पुत्र सुभद्रा का अभिमन्यू, ओर द्रोपती के बेट्टे इत सैं।
सारे ए ये महारथी सैं।। ६

अस्माकं तु विशिष्टा ये, तान्निबोध द्विजोत्तम।
नायका मम सैन्यस्य, संज्ञार्थं तान् ब्रवीमि ते।। ७

(म्हारी सैना के जोधे)

म्हारे तो सैं खास बीर जो, उन नै जाण द्विजाँ मैं उत्तम।

सैनानी मेरी सैना के, जाण उन्हाँ नै, तन्नै बोल्लूँ।। ७

भवान् भीमश्च कर्णश्च, कृपश्च समितिंजयः।
अश्वत्थामा विकर्णश्च, सौमदत्तिस्तथैव च।। ८

आप'र भीसम करण'र क्रिप सैं, जुध नै जो जीत्तण आळा।
अस्वत्थामा, बिकरण बी सैं, सोमदत्त का बेट्टा न्यूँ ए।। ८

अन्ये च बहवः शूरा, मदर्थे त्यक्तजीविताः।
नानाशस्त्रप्रहरणाः, सर्वे युद्धविशारदाः।। ९

ओर भोत सैं वीर बहादर, मेरी खात्तर ज्यान देणिये।
तह्राँ-तह्राँ के हथियाराँ तैं, लड़णाळे सैं सब रणचातर।। ९

अपर्याप्तं तदस्माकं, बलं भीष्माभिरक्षितम्।
पर्याप्तं त्विदमेतेषां, बलं भीमाभिरक्षितम्।। १०

(दोन्नूँ फौज्जाँ की तुलना)

कूत्ती नाँ जा म्हारी सैणा, भीसम जी सैं जिस के रक्षक।
गिणी-मिणी तो इन की सैणा, भीम बण्या सै जिस का रक्षक।। १०

अयनेषु च सर्वेषु, यथाभागमवस्थिताः।
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु, भवन्तः सर्व एव हि।। ११

(हुकम द्रोण नै दुर्योधन का)

सब मोच्यौं पै निज हिस्स्याँ मैं, डटे खड़े थम सारे जोधे।
भीसम की ए पूरी तह्रियाँ, करो रुखाळी आप सबैं मिल।। ११

तस्य संजनयन् हर्षं, कुरुवृद्धः पितामहः।
सिंहनादं विनद्योच्चैः, शङ्खं दध्मौ प्रतापवान्।। १२

(भीसम जी नै सङ्ख बजाया)

उस कै उत्पन करदे खुसियाँ, कुरुकुल मैं बूड्ढै परतापी।
दाद्दा जी नै सेर-सरीखी, धाड़ मार कैं सङ्ख बजाया।। १२

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च, पणवानकगोमुखाः।
सहसैवाभ्यहन्यन्त, स शब्दस्तुमुलोऽभवत्।। १३

(मारू बाज्जै बाज्जण लाग्गे)

उस कै पाच्छै सङ्ख, भेरियाँ, पणव, नगाड़े, आनक, गोमुख।
जोर-जोर तैं बाज्जण लाग्गे, वो सोर घणा उन का माच्च्या।। १३

ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते, महति स्यन्दने स्थितौ।
माधवः पाण्डवश्चैव, दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः।। १४

(पाण्डुसैणा नै सङ्ख बजाए)

पाच्छै, धोळे घोड़्याँ आळै, बडै अरथ मैं बैट्ठे दोन्नूँ।
मधु राच्छस नै मारणियै नै, अर पाण्डू कै सुत अर्जन नै।
अजब-गजब दो सङ्ख बजाए।। १४

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो, देवदत्तं धनंजयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं, भीमकर्मा वृकोदरः।।१५

पाञ्चजन्य था हृषीकेश नै, देवदत्त था धन जीत्तणियै।
अर्जन नै बी सङ्ख बजाया, पौण्ड्र बजाया बड़ा सङ्ख था।।
कर्म डराँदे करणै आळै, काच्चा-पाक्का करड़ा-मान्दा।
सबै पचावै जिसा भेडिया, उसे तह्याँ कै भीमसैन नै।। १५

अनन्तविजयं राजा, कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च, सुघोषमणिपुष्पकौ।। १६

अनन्तविजै था कुन्ती कै सुत, राज्जा जी नै सङ्ख बजाया।
सुघोस नकुळ नै अर मणिपुष्पक, सहदेव नै बी था बजाया।। १६

काश्यश्च परमेष्वासः, शिखण्डी च महारथः।
धृष्टद्युम्नो विराटश्च, सात्यकिश्चापराजितः।। १७

बड़े धनुर्धर काशिराज नै, ओर सिखण्डी महारथी नै।
ध्रिस्टद्युमन अर विराट नै बी, सात्यकि जो नाँ हार्‌या, उस नै।। १७

द्रुपदो द्रौपदेयाश्च, सर्वशः पृथिवीपते।
सौभद्रश्च महाबाहुः, शङ्खान् दध्मुः पृथक् पृथक्।। १८

द्रुपद, द्रोपती के बेट्टयाँ नै, सबै तरफ तैं हे राज्जा जी।
बड़ी भुजा आळै अभिमन्यू, पुत्र सुभद्रा का जो, उस नै।
सङ्ख बजाए न्यारे-न्यारे।। १८

स घोषो धार्तराष्ट्राणां, हृदयानि व्यदारयत्।
नभश्च पृथिवीं चैव, तुमुलो व्यनुनादयन्।। १९

(कोरू सैणा पै असर पड़्या के)

उस सङ्खनाद नै हिरदै, ध्रितरास्ट्रसुताँ के पाड़ दिये।
अम्बर अर धरती नै भीसण, नाद रह्या जो खूब गुँजादा।। १९

अथ व्यवस्थितान् दृष्ट्वा, धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः।
प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते, धनुरुद्यम्य पाण्डवः।। २०

(कोरूसैणा नै लख, अर्जन किरसण तैं बोल्ल्या)

व्यूह बणाए खड़े देख कैं, ध्रितराष्ट्रसुताँ नै अर्जन था।
अस्त्र चलाणै की जिब त्यारी, धनुस् उठा कैं पाण्डू का सुत।। २०

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते।
राज्जाजी, तद किरसण ताईं, या बात कही अर्जन नै थी।

अर्जुन उवाच
सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत।। २१

अर्जन बोल्ल्या

दोन्नूँ फोज्जाँ कै तैं बीच्चूँ, अरथ खड्या कर, मेरा किरसण। २१

यावदेतान्निरीक्षेऽहं, योद्धुकामानवस्थितान्।
कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन् रणसमुद्यमे।। २२

जो इन नै देक्खूँ मैं जो ये, लड़ना चाँह्दे खड़े उरै सैं।
किन तैं मन्नै लड़ना इत सै, लड़नै की इब इस त्यारी मैं।। २२

योत्स्यमानानवेक्षेऽहं, य एतेऽत्र समागताः।
धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः।। २३

ईब लड़णिये इन नै देक्खूँ, जो ये इत सैँ आए सारे।
खोट्टी सोच-समझ आळै इस, ध्रितरास्टरसुत दुर्योधन का।
जुध मैँ प्रिय जो करणा चाह्वैं।। २३

संजय उवाच

एवमुक्तो हृषीकेशो, गुडकेशेन भारत।
सेनयोरुभयोर्मध्ये, स्थापयित्वा रथोत्तमम्।। २४

सञ्जै बोल्ल्या
(किरसण अर्जन तैँ बोल्ल्या)

न्यूँ बोल्ल्या किरसण ती अर्जन, भरतवंस के हे ध्रितरास्टर।
दोन्नूँ सैना बीच खड़्या कर, अरथाँ मैँ बढिया आप्णा रथ।। २४

भीष्मद्रोणप्रमुखतः, सर्वेषां च महीक्षिताम्।
उवाच पार्थ पश्यैतान् समवेतान् कुरुनिति।। २५

भीसम, द्रोण गुरू कै स्याम्हीँ, सारे राज्याँ कै बी स्याम्हीँ।
बोल्ल्या किरसण अर्जन, देक्खो, इन कट्ठे होए कुरुआँ नैँ।। २५

तत्रापश्यत् स्थितान् पार्थः, पितॄनथ पितामहान्।
आचार्यान् मातुलान् भ्रातॄन्, पुत्रान् पौत्रान् सखींस्तथा।। २६

(उत देक्खे उस नै आप्णै सारै)

उठै देक्खे खड़े अर्जन नै, दोन्नूँ फौज्जाँ के ए जो थे।
बाप्पू, ताऊ, चाच्चे, फूफ्फे, दाद्दे, नान्ने और गुरू जी।
माम्मे, भाई, बेट्टे, पोत्ते, मित्तर, सुख-दुख कहणै आळे।। २६

श्वशुरान् सुहृदश्चैव, सेनयोरुभयोरपि।
तान् समीक्ष्य स कौन्तेयः, सर्वान् बन्धूनवस्थितान्।। २७

सुसरे, उस का भला चाण्हिये, दोन्नूँ ए उन फौज्जाँ मैँ वो।
देख उठै उन सारे आप्णे, बन्धू रिस्तेदाराँ नै स्थित।। २७

कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत्।

(दया भाव तैँ दुखिया अर्जन बोल्ल्या)

कुन्ती का सुत दया घणी तैँ, भर्‌या दुखी होन्दा न्यूँ बोल्ल्या।

अर्जुन उवाच[१]

दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण, युयुत्सुं समुपस्थितम्।। २८

अर्जन बोल्ल्या

देख कैँ इन किसना, आप्णे, लड़ना चाँह्दे आद्दमियाँ नैँ।। २८

सीदन्ति मम गात्राणि, मुखं च परिशुष्यति।
वेपथुश्च शरीरे मे, रोमहर्षश्च जायते।। २९

ढील्ले पड़गे मेरे अँग-अँग, मुँह बी पूरा जा सै सूक्या।
धूज्जण लाग्गी देही मेरी, खड़े रूँगटे हो ह्वे ये सैँ।। २९

गाण्डीवं स्रंसते हस्तात् त्वक् चैव परिदह्यते।
न च शक्नोम्यवस्थातुं, भ्रमतीव च मे मनः।। ३०

गाण्डीव पड़ ह्या हाथ तैँ सै, खाल जळै सै ओर घणी या।
ओर खड़्या मैँ रह नाँ पान्दा, चक्कर-सा खा मेरा मन बी।। ३०

निमित्तानि च पश्यामि, विपरीतानि केशव।
न च श्रेयोऽनुपश्यामि, हत्वा स्वजनमाहवे।। ३१

सोण देखदा उल्टे किरसण, ओर भला नाँ देक्खूँ मैँ सूँ।
मार जुद्ध मैँ आपणे माणस।। ३१

न काङ्क्षे विजयं कृष्ण, न च राज्यं सुखानि च।
किं नो राज्येन गोविन्द, किं भोगैर्जीवितेन वा।। ३२

नाँ मैँ चाहूँ जीत किसन सूँ, नाँ ए राज, सुखाँ नै बी नाँ।
के मिल ज्या गा हमैँ राज तैँ?, गोबिन्द, के भोग्गाँ तैँ होगा?
जीणै तैँ ए या के होगा?।। ३२

---

१. स्लोक्कै मैँ सै 'बोल्ल्या' बोल्या, नहीँ जरूरी इत यो कह्णा।

येषामर्थे काङ्क्षितं नो, राज्यं भोगाः सुखानि च।
त इमेऽवस्थिता युद्धे, प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च।। ३३

जिन की खात्तर चाव्हाँ हम साँ, राजपाट अर भोग, सुखाँ नै।
वैं ये सारे खड़े युद्ध मैं, ज्यान छोड़ कैं ओर धनाँ नै।। ३३

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः।
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः, श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा।। ३४

चाल-चलण की सीख देणिये, विद्या देणाळे आचारज।
जलम देणियाँ की पीड्ढी के, ताऊ, चाच्चे, बाप उरै सैं।
बेट्टे, पोत्ते, दाद्दे, माम्मे, सुसरे, साळे, समधी बी सैं।। ३४

एतान्न हन्तुमिच्छामि, घ्नतोऽपि मधुसूदन।
अपि त्रैलौक्यराज्यस्य, हेतोः किं नु महीकृते।। ३५

इन नै नाँ मार्‌या चाहूँ, मारैं मन्नै, तो बी किरसण।
तीन लोक का राज मिल्यैं बी, फेर भला के धरती खात्तर?।। ३५

निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः, का प्रीतिः स्याज्जनार्दन।
पापमेवाश्रयेदस्मान्, हत्वैतानाततायिनः।। ३६

मार गिरा कैं ध्रितरास्टरक्याँ नै, हाम् नै कोण खुसी होवै गी?
पाप्पै लाग्गै हाम् नै ये सब, मार जुद्ध मैं ये अन्न्याई।
अन्न्याई ये नरकाँ जोग्गे, जुध मैं मर सुरगाँ मैं जाँगै।
हाम्मै होंगे पाप्पी इन नै, मार सुरग मैं भेज्जण आळे।। ३६

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं, धार्तराष्ट्रान् स्वबान्धवान्।
स्वजनं हि कथं हत्वा, सुखिनः स्याम माधव।। ३७

(लड़नै मैं सै भोत बुराई)

ठीक नहीं हम इन नै माराँ, बन्धुसहित ध्रितरास्टरक्याँ नै।
सैं ये भाई-बन्धु आप्णे, आप्णे माणस मार सुखी हम।
होवाँ किस तह्रियाँ? बोल किसन ।। ३७

यद्यप्येते न पश्यन्ति, लोभोपहतचेतसः।
कुलक्षयकृतं दोषं, मित्रद्रोहे च पातकम्।। ३८

ठीक सै, ये नहीं समझदे, लालच नै इन की मत मारी।
कुलनास करदा जो बुराई, मित्र हितैसी, प्यार्‌याँ ताँईं।
बुरा करण मैं पाप न जाणैं।। ३८

कथं न ज्ञेयमस्माभिः, पापादस्मान्निवर्तितुम्।
कुलक्षयकृतं दोषं, प्रपश्यद्भिर्जनार्दन।। ३९

(युध नाँ हाम् नै करणा चाहिये)

क्यूँ नाँ चहिये जो हम जाणाँ, इसै पाप तैं बचणा केसव।
कुळ कै नास मैं बुराई नै, देक्खाँ समझाँ भली तह्राँ साँ।। ३९

कुलक्षये प्रणश्यन्ति, कुलधर्माः सनातनाः।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत।। ४०

(युध तैं होणी घोर बुराई)

कुळ का नास जिबैं हो सै तद, टूट्टैं कुळ की रीत पुराणी।
रीत टूटदे सारै कुळ नै, अधरम काब्बू मैं कर ले सै।। ४०

अधर्माभिभवात्कृष्ण, प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय, जायते वर्णसङ्करः।। ४१

अधरम दाब्बै कुळ नै जिब सै, किरसण, बिगड़ै कुळ की नारी।
कुळनार बिगडदैं किरसण, हों, नाजायज औलाद कुळाँ मैं।
वरणधरम सब गड़बड़ होवैं, सन्तानाँ मैं ये सब बिगड़ैं।। ४१

सङ्करो नरकायैव, कुलघ्नानां कुलस्य च।
पतन्ति पितरो ह्येषां, लुप्तपिण्डोदकक्रियाः।। ४२

इन नाजायज औलाद्दाँ मैं, वरणधरम का घाळमेळ वो।
सिरफ नरक मैं ले ज्या गा, कुळ कै घात्ती नै अर कुळ नै।
गिरैं नरक मैं इन के पुरखे, तर्पण स्राध न हौवैं जिन के।। ४२

दोषैरेतैः कुलघ्नानां, वर्णसङ्करकारकैः।
उत्साद्यन्ते जातिधर्माः, कुलधर्माश्च शाश्वताः।। ४३

कुळ के घात्ती लोग्गाँ के, वर्णाँ नै भ्रस्ट करण आळे।

इन दोस्साँ तैँ बिगड़ैँ टूट्टैँ, जातसुभावी ओर कुळाँ के।
धरम कदे तैँ चाल्ले आए।। ४३

उत्सन्नकुलधर्माणां, मनुष्याणां जनार्दन।
नरकेऽनियतं वासो, भवतीत्यनुशुश्रुम।। ४४

टूट्टी कुळमर्यादा आळे, लोग्गाँ का किरसण, नरकाँ मैँ।
बास सुनिस्चित हौवै, या हम्, सुणदे आए सदा-सदा तैँ।। ४४

अहो बत महत्पापं, कर्तुं व्यवसिता वयम्।
यद्राज्यसुखलोभेन, हन्तुं स्वजनमुद्यताः।। ४५

(भोत गलत हाम् कर ह्वे इब साँ)

बुरी बात सै, बड़ा पाप हम, करणै खात्तर त्यार खड़े साँ।
जो राज'र सुख कै लालच तैँ, मारण आप्प्याँ नै त्यार खड़े।। ४५

यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः।
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत्।। ४६

(मन्नै मारैँ, तो बी आच्छा)

ध्रितरास्टरसुत सस्त्र हाथ ले, युध मैँ मारैँ मन्नै, अर मैँ।
करूँ न सामना हो निहत्था, इस तैँ मेरा भोत भला हो।। ४६

संजय उवाच

एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये, रथोपस्थ उपाविशत्।
विसृज्य सशरं चापं, शोकसंविग्नमानसः।। ४७

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादेऽर्जुनविषादयोगो नाम प्रथमोध्यायः।। १।।

सञ्जै बोल्ल्या

(गेर धनुस जा पाच्छै बैट्ठ्या)

न्यूँ कह अर्जन रणछेत्तर मैँ, रथ मैँ पाच्छै नै जा बैट्ठ्या।
बाणाँ सँग वो गेर धनुस नै, हो दुख मैँ गारत मन आळा।। ४७

स्रीमती सीत्तादेब्बी अर स्रीस्रीनिवास सास्तरी कै बेट्टै सिवनारायण सास्तरी कै हरियाणी भास्सा कै गीत्तायन काब्ब्यभास्य मैँ पहला अध्याय पूरा होया।। १।।